संसदीय क्षेत्र कोटा में डॉ. अम्बेडकर छात्रावास के शिलान्यास कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष जी का संबोधन

———

उत्थान समिति के तत्वाधान में आयोजित इस छात्रावास के शिलान्यास समारोह में मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं। ये इस समाज का बहुत पुराना छात्रावास है। जिन लोगों ने इस छात्रावास के निर्माण में सहयोग दिया है, तन से किया, मन से किया, धन से किया, समर्पण किया, मैं उन सभी लोगों को साधुवाद देता हूं।

आज हम सबने बाबासाहेब अंबेडकर जी की मूर्ति पर माल्यार्पण किया है। बाबासाहेब का सपना था कि देश का अंतिम व्यक्ति, चाहे पिछड़ा हो, दलित हो, शोषित हो, उसको समाज में न्याय मिले।

जब बाबा साहेब जी ने संविधान का निर्माण किया, तो आज हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत है। भारत विविधता, विशालता, विविध संस्कृति वाला देश है। समानता, न्याय और समतामूलक समाज की नींव बाबासाहेब ने रखी थी, आज पूरी दुनिया में भारत एक ऐसा देश है, जहां समाज के प्रत्येक व्यक्ति को भी अपने मौलिक अधिकारों के लिए न्याय प्राप्त करने का अधिकार है। इसीलिए आज आवश्यकता है कि हमारे समाज के नौजवान बाबासाहेब अंबेडकर जी के विचारों पर चलें।

हर मां की कोख से बाबासाहेब अंबेडकर जी के विचारों पर चलने वाला व्यक्ति पैदा हो, जो इस देश को आगे ले जाए, राष्ट्र को आगे ले जाए, समाज को आगे ले जाए, जब समाज की प्रगति होगी, खुशहाली आएगी, समृद्धि आएगी, तो देश में खुशहाली और समृद्धि आएगी। इसीलिए हर समाज को अपने यहां एक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की अलख जगाने की आवश्यकता है। एक अच्छी शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण एवं संस्कारी शिक्षा के माध्यम से

हमारा नौजवान देश और प्रदेश का नेतृत्व करे। इसके लिए समाज को सामूहिक प्रयास करना चाहिए। समाज में पैदा होने वाले हर बेटे-बेटी को हम अच्छी और संस्कारी शिक्षा देकर भारत का उत्कृष्ट नौजवान बनाएंगे। यही सामाजिक परिवर्तन है। समाज में सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना, नए परिवर्तन के युग की ओर प्रवेश करना और हम शिक्षा की वजह से आर्थिक रूप से मजबूत हो सकें।

हर गांव में तथा शहर में रहने वाला हर व्यक्ति जब आर्थिक रूप से मजबूत होगा तो भारत का आर्थिक तंत्र भी मजबूत होगा। इसलिए समाज को संगठित करके हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि हम हर व्यक्ति को रोजगार से कैसे जोड़े, उसको अच्छी शिक्षा कैसे मिले। वह टेक्निकल शिक्षा प्राप्त करे, मेडिकल की शिक्षा प्राप्त करे। वह डॉक्टर बने, इंजीनियर बने, चार्टेड अकाउंटेंट बने तथा वैज्ञानिक बने। वह समाज का नेतृत्व करते हुए समाज के लोगों को भी आगे लेकर जाए। इस समाज के जो लोग बड़े पदों का नेतृत्व कर रहे हैं, उनकी भी जिम्मेदारी है कि समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन करने में उनका योगदान होना चाहिए।

मुझे आशा है कि हम सामूहिकता के साथ मिलकर काम करेंगे तो एक दिन समाज में परिवर्तन आएगा ही आएगा। यह हम सबकी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी हमें निभानी है। आज आजादी का 75वां अमृत महोत्सव चल रहा है। अमृत तभी निकलेगा, जब हम मंथन करेंगे, विचार करेंगे, चर्चा तथा संवाद करेंगे। जब हम समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन करने के लक्ष्यों के साथ काम करेंगे तो निश्चित रूप से अमृत निकलेगा ही निकलेगा, क्योंकि बैरवा समाज से मेरा बहुत निकट का संबंध है। जब मैं दूर-दराज के गांवों में जाता हूँ तो देखता हूँ कि आज भी लोग कठिन चुनौतियों से लड़ रहे हैं। वे संघर्ष कर रहे हैं। उनके पास बहुत अच्छी अपॉर्चुनिटी है, लेकिन उन्हें जानकारी नहीं है। इसलिए

जानकारी के अभाव में समाज पिछड़ा न रह जाए इसलिए सरकार की जो भी योजनाएं हैं, वे समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और उन योजनाओं का लाभ उन्हें मिले।

अभी पिछली बार दिल्ली के अम्बेडकर भवन में कुछ लोग घूमने आए थे। उन्होंने कहा कि अम्बेडकर संस्थान की तरफ से फैलोशिप योजना होगी। मैंने उस समय समाज के लोगों को कहा था कि हर गांव से दो-दो नौजवानों को तैयार कीजिए। उन नौजवानों को हम दिल्ली लेकर आएंगे। उन्हें संसद दिखाएंगे। संसद के केन्द्रीय कक्ष में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी ने और कई मनीषियों ने संविधान बनाया था। अम्बेडकर जी के शोध प्रतिष्ठान को दिखाएंगे। वे अम्बेडकर साहेब के कार्यों को देखेंगे, उनके जीवन दर्शन को देखेंगे। उनमें प्रेरणा आएगी, नया उत्साह आएगा। उनमें कार्य करने की नई शक्ति आएगी। देश के अलग-अलग हिस्सों के अंदर बाबा साहेब अम्बेडकर और कई लोगों ने समाज के जीवन में परिवर्तन लाने का काम किया, उनकी जीवनी से उनको नई प्रेरणा मिलेगी कि मैं भी समाज में परिवर्तन कर सकता हूँ। इसलिए मैंने आग्रहपूर्वक कहा है कि सब लोग आए। सरकार की जितनी योजनाएं हैं, उन योजनाओं का लाभ हमारी महिलाओं को मिले, हमारी बच्चियों को मिले, नौजवानों को मिले और सामाजिक-आर्थिक तंत्र का इस तरीके से ढाँचा तैयार करे कि एक छात्रावास के अंदर एक कार्यालय हो, जिसमें समस्त जानकारियां हों। देश के अन्दर कहीं भी कोई भी परेशानी आए तो मैं आपके साथ खड़ा हूँ। किसी भी बच्चे को कहीं भी पढ़ना हो, देश में पढ़ना हो या देश के बाहर पढ़ना हो तो मैं उसके साथ खड़ा हूँ।

हमारी जो आने वाली पीढ़ी है, वह शिक्षित होगी, और भारत का नेतृत्व करने वाली भी होगी। वह पीढ़ी आपमें से निकले, यह हमारा संकल्प होना चाहिए।